प्रवासी भारतीय सम्मेलन

CITY भास्कर

जयपुर, रविवार, 8 जनवरी, 2012

52 परियोजनाओं के साथ राजस्थान देश में प्रथम होगा सोलर मिशन के तहत

15 के करीब प्रवासी भारतीयों से सीधी बात आज के अंक में

10 से ज्यादा कॉलेजों ने लिया इंटरेक्टिव सैशन में हिस्सा। इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट, मेडिकल, मास कम्युनिकेशन और सोश्यल वर्क के स्टूडेंट्स शामिल हुए

1000 से ज्यादा छात्र, अभिभावक और विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों ने की शिरकत

4 पैनलिस्ट ने दिए स्टूडेंट्स के सवालों के जवाब

ये भी हुए शरीक

इन कुछ प्रमुख डेलिगेट्स के साथ सम्मेलन में भाग लेने के लिए वेस्टइंडीज के खेमराज नानू, लॉर्ड बीमूसी पारख, लॉर्ड खामिद हमीद, प्रोफेसर जी. मोहन गोपाल और बेजाद ग्रुप ऑफ कंपनी के सी.के. मेनन, मलेशिया के अजीत सिंह आदि भी शनिवार को शहर पहुंचे।

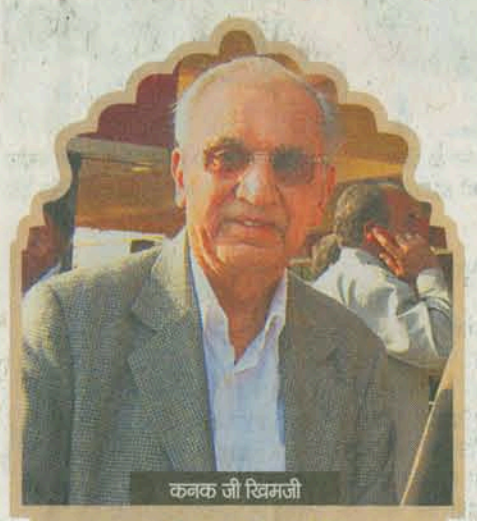

कनक जी खिमजी

फर्स्ट प्रवासी अवॉर्डी

प्रवासी भारतीय सम्मेलन के पहले प्रवासी भारतीय का अवॉर्ड पाने वाले कनक जी खिमजी ने एयरपोर्ट पर अपने साथियों से मिलकर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा, भारत में व्यापार की बहुत संभावनाएं हैं, जो निरंतर बढ़ती जा रही हैं। राजस्थान में इन्वेस्ट के सवाल पर उन्होंने कहा, यहां भी इनवेस्ट की संभावनाएं तलाशेंगे।

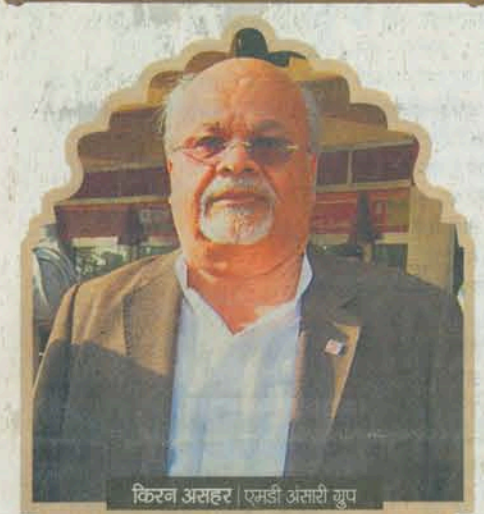

किरन असहर | एमडी अंसारी ग्रुप

यहां भी देखेंगे अवसर

अंसारी ग्रुप ऑफ कंपनीज के ग्रुप मैनेजिंग डायरेक्टर किरन असहर ने कहा, हम वर्षों से विदेश में कंपनी डालकर काम कर रहे हैं। अब इंडिया में भी अवसर देखेंगे। उन्होंने कहा, यहां हम हमारे डेलिगेशन के साथ सभी स्टेट के प्रतिनिधियों से मिलेंगे और देशभर में व्यापार की अवसर देखकर यहां के राज्यों के निवेश के बारे में विचार करेंगे।

ओपी चौधरी | प्रेसिडेंट ऑपल सॉफ्ट

नहीं गया सरकारी दफ्तर

बीस साल से यूएसए के कैलिफोर्निया में सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री में बिजनेस कर रहा हूं। किसी भी सरकारी क्लियरेंस के लिए बीस वर्ष में एक बार भी सरकारी दफ्तर नहीं गया। क्या ऐसा यहां संभव है? हम राजस्थान में सोलर एनर्जी में निवेश करना चाहते थे, मगर पॉलिसी ऐसी है कि प्लांट लगाते हैं, तो फिक्स रेट पर बिजली सरकार को बेचने की बाध्यता होगी।

बाएं से लंदन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के उपाध्यक्ष लॉर्ड करन बिलीमोरिया, यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो के मंक स्कूल फॉर ग्लोबल अफेयर्स की पोस्ट डॉक्ट्रेट फैलो डॉ. अनिता सिंह, यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन की चांसलर और प्रेसिडेंट रेणु खटोर, क्यूरेटर इंक टॉक्स लक्ष्मी प्रत्रे, प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय के सलाहकार डॉ. ए दीदार सिंह और शासन सचिव, खेल एवं युवा मामलात रोहित कुमार सिंह।

संभावनाओं से मिली सफलता

ओवरसीज जाकर सफल होने वाले लोगों में सबसे ज्यादा इंडियन कम्युनिटी के हैं। दुनिया की यंग पॉपुलेशन का सबसे बड़ा हिस्सा भी भारत में ही है। प्रवासी भारतीय सम्मेलन के तहत शनिवार को महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में इन दोनों समूहों के प्रतिनिधियों ने संवाद किया। सोशल, एजुकेशन और फूड एंड बेवरेज के क्षेत्र में विदेशों में जाकर सफल होने वाली चार बड़ी हस्तियों ने शहर के युवाओं को अपनी सक्सेस स्टोरी सुनाई और उनसे संवाद किया।

1. व्यवस्था में युवाओं का योगदान

कनाडा में इंडो-कैनेडियन युवा पॉलिटिक्स में भी अपना स्थान रखते हैं। यही वजह है कि वे पूरे देश की व्यवस्था में सीधे तौर पर अपना प्रभाव रखते हैं। कनाडा में एक बिलियन भारतीय रहते हैं। ये सभी कनाडा की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वहां का व्यापार भी वर्ष 2008 से पहले 85 प्रतिशत अमेरिका से था, लेकिन अब इसमें भारत की हिस्सेदारी हो गई है। आधुनिक विज्ञान और तकनीक में निवेश तभी हो सकता है, जब निचले स्तर पर उसका प्रभाव रहे। भारत- कनाडा के बीच ज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानवता जैसे विषयों पर भी आदान-प्रदान की जरूरत है।

■ **अनिता सिंह** | पोस्ट डॉक्ट्रेट फैलो, यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो

2. अगली पीढ़ी को सौंपनी है पृथ्वी

हमारे पुरखों से मिली जमीन के हम मालिक नहीं हैं। हमने यह जमीन अपनी अगली पीढ़ी के लिए उधार ली है। इंक टॉक्स की लक्ष्मी प्रत्रे जो इस आयोजन के जरिए दुनियाभर के इनोवेटिव लोगों को एक मंच पर लाती हैं, कहती हैं कि दुनिया में कहीं भी आगे बढ़ना है, तो हमारे आसपास के लोगों का सम्मान करना चाहिए। वे कहती हैं -कनेक्शन होना जरूरी है। यूएसए दुनिया की सबसे अमीर डेमोक्रेसी है और भारत सबसे बड़ी डेमोक्रेसी। इन दोनों का जुड़ना बहुत महत्वपूर्ण है। नॉलेज लेने के लिए जहां जाना पड़े, जाना चाहिए। फिर कुछ सीख कर उसे अपने देश की तरक्की के लिए काम लेना चाहिए। ब्रेन ड्रेन नहीं, ब्रेन गेन की मिसाल कायम होनी चाहिए। युवाओं को प्रेरणा देने के लिए लक्ष्मी स्वामी विवेकानंद का एक किस्सा सुनाती हैं। एक बार किसी ने विवेकानंद ने पूछा कि अंधा होने से भी बुरा दुनिया में क्या है? तो विवेकानंद ने कहा, इससे भी बुरा है विजन खोना।

■ **लक्ष्मी प्रत्रे** | क्यूरेटर, इंक टॉक्स

3. सपनों में ताकत, दिल में पैशन

जिंदगी ने मुझे तीन सबक सिखाए। पहला, सपने देखने चाहिए, इनमें बहुत ताकत होती है। यूपी के फर्रुखाबाद में पैदा हुई। सपना था ऊंची डिग्री हासिल करूं। इलाहाबाद यूनि. से ग्रेजुएशन किया। 18 साल की उम्र में शादी हो गई। लगा, बस जिंदगी रुक जाएगी। शादी के बाद पति के साथ यूएस चली गई। एक दिन पति ने पूछा - तुम मायूस क्यों हो? मैंने कहा मेरा सपना पढ़ाई करना है। वे मुझे यूनिवर्सिटी ले गए। मैं हिंदी बैकग्राउंड से थी। नारायण आर. कन्या पाठशाला से पढ़ी लड़की अंग्रेजी कैसे बोल पाती? एडमिशन एडवाईजर ने कहा, अंडर ग्रेजुएट क्लासेज में एडमिशन दे सकते हैं। मैंने कहा मुझे मास्टर्स में चाहिए। उन्होंने मुझसे पीछा छुड़ाने के लिए बिना एडमिशन कुछ दिन क्लास में पढ़ने का मौका दे दिया।

दूसरा सबक | सपनों को पूरा करने के लिए पैशन चाहिए। पहली बार क्लास में गई, तो कुछ भी समझ नहीं आया। घर आकर बहुत रोई। मुझे अंग्रेजी नहीं आती थी, लेकिन मैं पैशनेट थी। इसलिए रोज 8 घंटे इंग्लिश चैनल लगाकर टीवी देखा। रोज 7-8 असाइनमेंट पूरे किए, फिर एक दिन मैंने सबसे ज्यादा मार्क्स हासिल किए। मुझे यूनिवर्सिटी में सीधा एडमिशन मिला। यह संभव हुआ क्योंकि हम हिंदुस्तानियों में लगन, आत्मविश्वास और दिल में कुछ करने की आग है।

तीसरा सबक | उन लोगों को कभी मत भूलो, जो तुम्हारी सफलता के सफर में सहयोगी बने। हो सकता है ऐसे कुछ लोगों से आप कभी न मिले हों, लेकिन जिन्होंने तुम्हें प्रेरणा दी। शीशे के सामने खड़े होकर अपनी आंखों में सपने देखो। अगर तुम में यह है, तो तुम इनोवेटर जरूर बनोगे।

■ **रेणु खटोर** | चांसलर व प्रेसिडेंट, ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी

4. टीचर बन सकते हैं प्रेरणा

हैदराबाद में पैदा हुआ। अब्दुल कलाम से प्रभावित था। संयोगवश एक बार मिलने का मौका मिला। मैंने उनसे पूछा, जो कुछ भी आप हो, वह कैसे संभव हुआ? उन्होंने कहा, रामेश्वरम् के गरीब परिवार से हूं। जब 11 साल का था, प्राइमरी क्लास में टीचर बोर्ड पर चित्र बनाकर फ्लाइट कॉन्सेप्ट समझा रही थीं। उन्होंने समझाया कि चीजें कैसे उड़ती हैं। बस मुझे प्रेरणा मिल गई। एक टीचर ने मेरी जिंदगी बदल दी, फिर मैं एक साइंटिस्ट, हैड स्पेस प्रोग्रामर, स्पेस साइंटिस्ट और प्रेसिडेंट बना, केवल एक टीचर की बदौलत। दूसरा अनुभव हमेशा गलत निर्णयों से आते हैं। पिता ने बिजनेस करने के लिए मना किया और मैं कई बार फेल भी हुआ, लेकिन मैं मैं सीखता गया अपने अनुभवों से।

■ **लॉर्ड करन बिलिमोरिया** | चेयरमैन, कोबरा बीयर

कहानियों से दी सीख

संवाद के दौरान कुछ ऐसी कहानियां कहीं गई, जिन्होंने युवाओं को इंस्पायर किया।

इंडियन यूथ बन गए हैं बड़े हाथी

एक जू में एक खंभे पर जंजीर से बंधे हाथी को देखकर एक बच्चे ने जू कीपर से पूछा कि यह हाथी परेशान क्यों है? जू कीपर ने कहा हाथी जंगल में भाग जाना चाहता है। बच्चे ने कहा कि हाथी इतना बड़ा है और जंजीर भी इतनी भारी नहीं है। हाथी के लिए बहुत आसान है कि वह इसे तोड़कर भाग जाए। जू कीपर ने जवाब दिया कि जब इस हाथी को यहां लाया गया था, तब यह बहुत छोटा था और जंजीर भी मोटी थी। हाथी के बच्चे ने कई दिन तक जंजीर तोड़ने की कोशिश की, मगर नहीं तोड़ पाया। फिर उसने सोच लिया कि वह नहीं भाग पाएगा। अब हाथी काफी बड़ा हो गया है, मगर यह इस बात को नहीं जानता।

सीख इंडियन यूथ भी आज उस बड़े हाथी की तरह ढेरों प्रतिभाओं के धनी हैं। जरूरत केवल यह पहचानने की है कि हम क्या-क्या कर सकते हैं।'

■ **लक्ष्मी प्रत्रे** | क्यूरेटर, इंक कॉन्फ्रेंस

छोटी बातें ही बनाती हैं बड़ी

एक बच्ची अपने ग्रैंड फादर के साथ समुद्र के किनारे टहलने जाती है। समुद्र की लहरों के साथ ढेरों मछलियां किनारे पर आ जाती हैं और तड़पने लगती हैं। उन्हें देख ग्रैंड फादर कहते हैं, हे भगवान कोई इन मछलियों के लिए कुछ करता क्यों नहीं? तभी बच्ची कुछ मछलियों को पानी में फेंकने लग जाती है। यह देख ग्रैंड फादर कहते हैं, बेटा बहुत हैं कितनों को बचाएगी। बच्ची जवाब देती है, जिन्हें पानी में डाल रही हूं, उतनी तो बच ही जाएंगी।

सीख छोटी-छोटी बातें मिलकर ही बड़ा प्रभाव पैदा करती हैं।'

■ **रेणु खटोर** | चांसलर व प्रेसिडेंट, ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी

अभाव आड़े नहीं आते

दक्षिण भारत में दो भाई किसी स्कूल में एडमिशन लेना चाहते थे। छोटे भाई को स्कूल में जगह नहीं मिली। फिर भी वह बड़े भाई के पीछे-पीछे दस किलोमीटर दूर पैदल स्कूल तक जाता था। बड़ा भाई खिड़की से छोटे को पढ़ने के लिए किताबें देता। इतने अभावों में भी पढ़ा हुआ वह दलित लड़का एक दिन लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स तक पहुंचा और वे थे भारत के पहले दलित राष्ट्रपति के.आर. नारायणन

सीख कोई भी, कहीं से भी और कुछ भी सीख सकता है।'

■ **लॉर्ड करन बिलिमोरिया** | को-फाउंडर

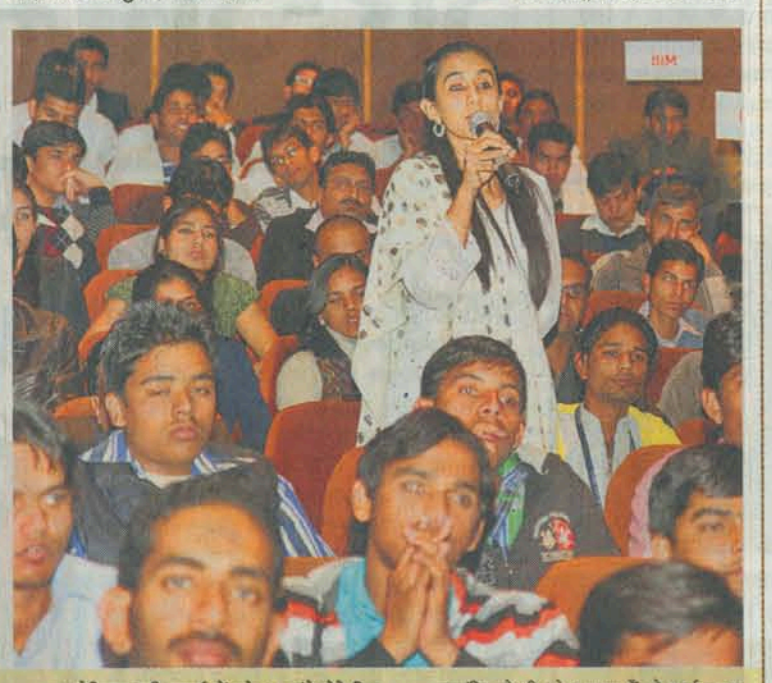

सवाल-जवाब

■ **मेडिकल की पढ़ाई में पूरे 24 घंटे मेरे लिए कम पड़ते हैं। ऐसे में अपनी लाइफ को एंजॉय कैसे करें?** प्रमा दुबे

रोजमर्रा की जिंदगी में ऐसे कई मौके आते हैं, जब हम अपने आसपास के लोगों को खुश करके खुद भी खुशी महसूस कर सकते हैं।

■ **विदेशी धरती भारतीयों के लिए कितनी सुरक्षित है?** गौरव

उतनी ही सुरक्षित है, जितनी यहां की है। हालांकि जो भी बुरे अनुभव हैं, वे दुर्भाग्यवश हैं।

■ **आपने कहा सपने देखें और पूरा करें, लेकिन मेरा सपना तो कोई पहले ही देखकर पूरा कर चुका है। ऐसे में मैं क्या करूं? क्या मैं दूसरा सपना देखना शुरू कर दूं?** यामिनी

आपकी ईमानदारी पसंद आई। दुनिया में सपनों की कोई कमी नहीं है। और सपने देखिए...और सपने देखिए...

रघुनाथ नैनत | फ्रांस

प्रस्तुत करना है शिवा नृत्य

पांडिचेरी में रहते हुए मैंने भरतनाट्यम की शिक्षा ली, साथ ही एंथ्रोपोलॉजी में पीएचडी भी की। इसके बाद फ्रांस शिफ्ट हो गया। वहां मैंने शिवा नृत्य की प्रस्तुतियां दीं। अब तक लगभग मैंने सभी देशों में परफॉर्म किया है। इस सम्मेलन में अलग-अलग देशों से आए प्रवासी भारतीयों से इंटरेक्ट कर उन्हें भरतनाट्यम के बारे में बताऊं। मेरी इच्छा है कि मैं शिवा नृत्य को भारत में भी प्रस्तुत करूं।

विनेश भीमन | पेपर प्रिंटिंग बिजनेसमैन

पहले इंटरेक्ट करेंगे

दुबई में पेपर प्रिंटिंग और अन्य बिजनेस से जुड़े गुजराती मूल के विनेश भीमन ने कहा, हम चेन्नई और मुंबई में पहले से काम कर रहे हैं। अब सम्मेलन में पहले यहां की संभावनाएं देखने के साथ एक्सपर्ट्स से इंटरेक्ट करेंगे और फिर राजस्थान में इनवेस्ट के बारे में सोचेंगे। उन्होंने अपनी कंपनी के बारे में बताया और कहा कि प्रतिनिधि व्यापार के दृष्टिकोण से आए हैं।

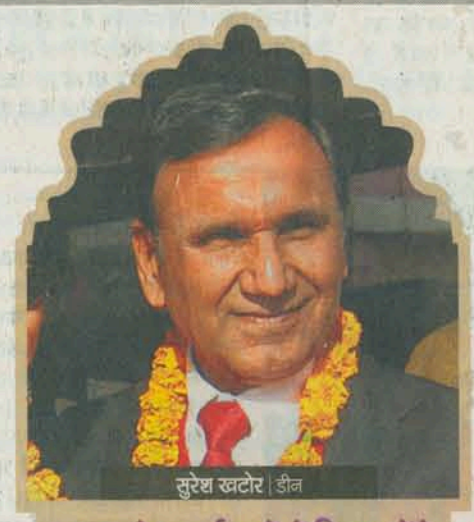

सुरेश खटोर | डीन

समाज के कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे

यूनिवर्सिटी ऑफ होस्टन के एसोसिएट डीन ऑफ ग्रेजुएट प्रोग्राम सुरेश के खटोर ने कहा, हम भी राजस्थानी हैं। राजस्थान के माहेश्वरी होने के नाते यहां हमेशा अवसर तलाशते रहते हैं। प्रवासी सम्मेलन के साथ माहेश्वरी समाज के कार्यक्रम में माहेश्वरी भवन भी जाएंगे और अपनी मिट्टी में ये दो दिन शान से बिताएंगे।

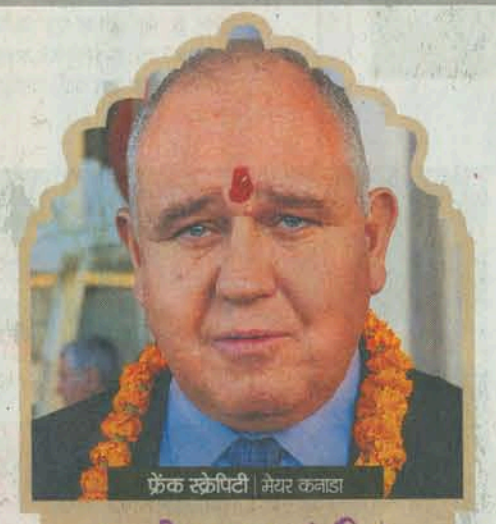

फ्रेंक स्क्रेपिटी | मेयर कनाडा

पहली बार आया हूं इंडिया

मैं पहली बार इंडिया आया हूं और मुझे पूरी उम्मीद है कि अपनी बेस्ट परफॉर्मेंस दूंगा, यह कहना था कनाडा के टाउन मरखम के मेयर फ्रेंक स्क्रेपिटी का। उन्होंने बताया, इंडिया के बारे में सुना बहुत था, लेकिन आना अब हुआ है। यहां पीपीटी में हिस्सा लेंगे और अपनी बेस्ट प्रजेंटेशन देने की कोशिश करेंगे। हमारे साथ इंडो-कैनेडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्य भी हैं।

अशोक थॉमस | इंजीनियर, त्रिनिदाद

फेमस है भारतीय डांस और खाना

वेस्टइंडीज के त्रिनिदाद शहर से आए इंजीनियर अशोक थॉमस ने कहा, मेरे फादर केरल से थे और यही कारण है कि मैं इंडिया को बहुत पसंद करता हूं। उन्होंने कहा, त्रिनिदाद में भारतीय मिर्ची, डांस और खाना बहुत फेमस हैं। वहां बहुत से भारतीय होने से मुझे यहां की मूवीज भी देखने को मिलती हैं। यहां मैं कल्चर और घूमने को एंजॉय करूंगा।